अलंकार- (अर्थालंकार) उपमा, रूपक एवं उत्प्रेक्षा (लक्षण एवं उदाहरण)

अलंकार की परिभाषा-

'काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं।"

अलंकार दो प्रकार के होते हैं-

- शब्दालंकार
- अर्थालंकार

उपमा अलंकार

जहाँ पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहां उपमा अलंकार होता है।

अथवा

जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। इसके चार अंग होते हैं-

उदाहरण- पीपर पात सरिस मन डोला।

- **उपमेय -** जिसकी तुलना की जाती है। (मन)
- **उपमान&** जिससे तुलना की जाती है। (पीपर पात)
- **साधारण धर्म-** जिसके कारण उपमेय और उपमान में तुलना दिखायी जाती है। (डोला)
- **वाचक शब्द-** वे शब्द जिनसे तुलना प्रकट हो । (सरिस)

पहचान:- सरिस, सम, समान, भाँति के जैसे, की तरह, इत्यादि वाचक शब्द होंगे वहाँ उपमा अलंकार होगा।

उदाहरण:-

- हरि पद कोमल कमल **से**।
- मुख मयंक **सम** मंजु मनोहर।
- तुम्हारा मुख चंद्र **सम** है।
- फूलों **सा** चेहरा तेरा कलियों **सी** मुस्कान है।

रूपक अलंकार

परिभाषा- जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित/अभेद आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

पहचान- रूपी अर्थ निकलेगा/योजक चिह्न (-) लगा होगा ।

उदाहरणः-

- **चरन-कमल** बंदौ हरि राई।
- उदित **उदयगिरि-मंच,** पर रघुवर **बाल-पतंग।**
- **मनसागर** मनसा लहरि, बूड़े बहे अनेक।
- **शशि-मुख** पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाए।।

उत्प्रेक्षा अलंकार

परिभाषा- जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

पहचान- मनु, मानो, जनु, जानौ, मानहु, जानहु, मनहु, जनहु, ज्यों आदि शब्द प्रयुक्त होंगे।

उदाहरणः-

- चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पट झीन।
  मानहु सुरसरिता विमल जल उछरत जुग मीन।।”
- सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
  मनहु नीलमणि शैल पर आतपु पर्‌यो प्रभात।।”
- धाये धाम काम सब त्यागी। **मनहु** रंक निधि लूटन लागी।”
- चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी। तिलक रेख सोभा **जनु** चाँकी।।